

पद २६९

(राग: काफी – ताल: त्रिताल)

नंदके चरावत गायी सब ब्रजमांही ॥ ध्रु. ॥ बन बन बजावे मुरली ।
मुरलीके नाद सुनायी ॥१॥ संग लिये गोपालन-मेला । वोही मेघन
सांवला ॥२॥ मानिक कहतसे ताहोकू । तोहे ध्यान देना
मोहेकू ॥३॥